बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, इल्मी और तहक़ीक़ी

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

वर्ष 7 — अंक 9

मार्च–2011

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ – 3

Phone No: 0522-2252230 — 0522-4062731 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per copy 20/-

Annual 200/-

सम्पादन समिति



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

मार्च 2011ई०

रबीउल अव्वल 1432हि० रबीउस्सानी 1432हि०

FORM-IV
(See Rule No-8)

1. Place of Publication:	**Noorehidayat Foundation Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow**
2. Periodicity:	**Monthly**
3. Printer's Name:	**Syed Kalbe Jawad Naqvi**
Whether citizen of India:	**Yes**
Address:	**39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow**
4. Publisher's Name:	**Syed Kalbe Jawad Naqvi**
Whether citizen of India:	**Yes**
Address:	**39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow**
5. Editor's Name:	**Syed Mustafa Husain Naqvi**
Whether citizen of India:	**Yes**
Local Address:	**Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow**
Permanent Address:	**Mohalla Syedana, Qasba Jais, Distt. Raibareli (U.P.)**
6. Owner's Name:	**Syed Kalbe Jawad Naqvi**
Whether citizen of India:	**Yes**
Address:	**39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow**

I Syed Kalbe Jawad Naqvi, hereby declare that the particulars given are true and correct to the best of my knowledge and belief.

Lucknow — **Syed Kalbe Jawad Naqvi**
Date: 28-02-2011 — **Printer and Publisher**

इस्लाम और इंसानी हुक़ूक़

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द
अनुवादः डॉ० आरिफ़ अब्बास

(5)

किताबे इलाही कुरआने मजीद और अहादीसे पैग़म्बरे इस्लाम से खुले तौर पर साबित है कि अल्लाह तआला ने इंसान को आज़ाद पैदा किया है और उसे इंतेख़ाब का हक़ दिया गया कि अपनी अक़्ल और फ़िक्र को इस्तेमाल करके हक़ तक पहँचे। नबियों और रसूलों को हुक्म है कि लोगों को हक़ की दावत दें, मगर अक़्ली दलीलों और मंतिक़ को बुनियाद बनाकर। कुरआन मजीद में 300 से ज़्यादा आयतें लोगों को समझ, फ़िक्र और तदबीर की दावत देती हैं। हुक्मे इलाही है कि मुझे मानो, कुबूल करो, मगर दलील के साथ। अंधी तक़लीद से कुरआन करीम ने जगह-जगह मना फ़रमाया है। कुरआन मजीद अपनी बात को ज़बरदस्ती थोपने का क़ायल और हामी नहीं है, बल्कि एलान कर रखा है, तर्जुमाः आप कह दीजिए कि यही मेरा रास्ता है और मैं बसीरत के साथ खुदा की तरफ़ दावत देता हूँ (सूर-ए-यूसुफ़ः 108) इसी तरह बेशुमार रिवायतें भी इसी मज़मून की हैं। इरशादे रसूल है, तर्जुमाः अल्लाह तआला इल्म तलाश करने वालों को दोस्त रखता है। इसी तरह से हज़रत अली[अ०] का इरशाद है जहाँ अक़्ल है वहाँ दीन भी है और शर्म भी है। ''अगर अल्लाह तआला को ज़बरदस्ती मंज़ूर होती तो वह खुद हर इंसान को ज़बरदस्ती तौर पर मोमिन पैदा करता।

इंसान की पैदाईश में अक़्ल और जज़्बात व ख़्वाहिशात दोनों शामिल हैं और यही इंसान का सबसे बड़ा इम्तियाज़ है। इसी सिलसिले में हज़रत अली[अ०] ने रसूले आज़म[स०] से नक़ल फ़रमाया है कि अल्लाह ने फ़रिश्तों की पैदाईश इस तरह से फ़रमाई है कि उनमें सिर्फ़ अक़्ल ही अक़्ल है और ख़्वाहिशात और जज़्बात से ख़ाली हैं और जानवरों को इस तरह पैदा किया कि उनमें जज़्बात और ख़्वाहिशात ही हैं और अक़्ल से महरूम हैं, मगर इंसान अक़्ल और ख़्वाहिशात और जज़्बात का मुरक्कब है। जब इंसान की अक़्ल जज़्बात व ख़्वाहिशात पर ग़ालिब आ जाती है तो वह फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हो जाता है, लेकिन जब उसके जज़्बात व ख़्वाहिशात अक़्ल पर ग़ालिब आ जाते हैं तो वह जानवरों से भी नीच हो जाता है। इंसान की ज़िंदगी को बाक़ी रखने के लिए ख़्वाहिशात और जज़्बात ज़रूरी हैं, मगर उन्हें अक़्ल के ताबे होना चाहिए चालाक और चालबाज़ लोगों की यही कोशिश रहती है कि इंसानों के जज़्बात को भड़का दिया जाए ताकि वह सही तरीक़े से अपनी अक़्ल से काम न लेने पाएं और उनके इशारों पर चलें। कभी मज़हबी जज़्बात भड़काए जाते हैं तो कभी ज़बान के जज़्बात और कभी ज़ात-पात को बुनियाद बनाकर पब्लिक के जज्बात को भड़काया जाता है। पूरी कोशिश ये होती है कि जब तक जज़्बात भड़के हुए हैं, उनसे ज़्यादा से ज़्यादा सियासी फ़ाएदा उठा लिया जाए, इससे पहले कि जज़्बात ठण्डे पड़ें। आज के दौर में सबसे कामयाब सियासतदाँ वही है जो अवामी जज़्बात भड़काकर उनको अपने मक़सद के लिए इस्तेमाल करने का हुनर जानता हो, लेकिन तारीख़ गवाह है कि तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उसमान के क़त्ल के बाद अवामी जज़्बात भड़के हुए थे। उस वक़्त हज़रत अली[अ०] की बैअत के लिए लोग आए। मौजूदा सियासत का तक़ाज़ा तो यही था कि

भड़के हुए जज़्बात से अपने मफ़ाद में इस्तेफ़ादा किया जाए, मगर हज़रत अली[अ०] ने सबको वापस कर दिया ये कहते हुए कि एक हफ़्ते बाद आना। अभी क्योंकि तुम्हारे जज़्बात तुम्हारी अक़्ल पर ग़ालिब हैं, जब तुम्हारी अक़्ल जज़्बात पर ग़ालिब आ जाए तब फैसला करना। इस वाक़िए से एक बुरे इल्ज़ाम की भी रद हो जाती है। कि क़त्ल में हज़रत अली[अ०] की मर्ज़ी शामिल थी क्योंकि अगर हल्की सी भी मर्ज़ी शामिल होती तो सबसे पहले फ़ायदा उठाने वाले ख़ुद अली[अ०] होते। हज़रत अली[अ०] ने अपनी बैअत के लिए किसी पर ज़बरदस्ती नहीं की। तारीख़ में बड़े-बड़े अस्हाब के नाम मिलते हैं, जिन्होंने बैअत नहीं की। लोगों ने कहा कि आप इजाज़त दीजिए तो ज़बरदस्ती उन्हें आपके सामने ले आएं तो फ़रमाया उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो। बहुत से लोगों ने बैअत तोड़ दी और दुश्मनों से जाकर मिल गए। अली[अ०] ने उन्हें कभी रोकने की भी कोशिश नहीं की। ये वह बात है जो आज की मुहज़्ज़ब दुनिया भी बर्दाश्त नहीं कर सकती कि हमारा कोई आदमी दुश्मन से मिल जाए।

इस्लाम में अक़्ल से काम न लेने वालों के लिए जहन्नम है। जब काफ़िरों से पूछा जाएगा कि तुम जहन्नम में कैसे भेजे गए तो वह जवाब देंगे ''अगर हम ने सुना होता या अक़्ल से काम लिया होता तो आज जहन्नम वालों में न होते।'' (सूरए मुल्कः 10) दूसरे मसलकों की किताबों के बारे में तो मैं नहीं बता सकता लेकिन शिया मसलक की सारी अहम किताबें बाबे इल्म व अक़्ल से शुरु होती हैं। रसूले इस्लाम[स०] और इमामों से सैकड़ों हदीसें इल्म और अक़्ल की अहमियत पर मिल जाएंगी। इरशादे रसूल[स०] है, तर्जुमाः ''तमाम नेकियाँ अक़्ल के ज़रिए हासिल होती हैं और जहाँ अक़्ल नहीं वहाँ दीन नहीं।'' (तोहफ़तुल उक़ूल, पेज-54) दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया, तर्जुमाः ''अक़्ल के वसीले से दुनिया और आख़िरत दोनों हासिल होती हैं, जो अक़्ल से महरूम है वह दुनिया और आख़िरत दोनों से महरूम है।'' एक और हदीस में वारिद हुआ है कि कुछ लोग किसी शख़्स की इबादतों और नेकियों की बहुत तारीफ़ कर रहे थे, रसूलुल्लाह[स०] ने दरयाफ़्त फ़रमाया, तर्जुमाः ''उसकी अक़्ल का मेयार क्या है? लोगों ने हसरत से कहा ऐ अल्लाह के रसल[स०] हम उस शख़्स की इबादतों और बेइन्तेहा नेकियों का ज़िक्र कर रहे हैं और आप उसकी अक़्ल के बारे में सवाल कर रहे हैं। रसूलुल्लाह[स०] ने जवाब दियाः जितनी जिसकी अक़्ल ज़्यादा होगी, आख़िरत और बारगाहे इलाही में उसका दर्जा उतना ही बलन्द होगा। इसी तरह इमाम रिज़ा के लिए भी ऐसी ही रिवायत मिलती है कि किसी शख़्स की इबादतों की तारीफ़ हो रही थी। उन्होंने फ़रमायाः उसकी अक़्ल कैसी है? लोगों ने पूछा इबादतों का अक़्ल से क्या ताल्लुक़? आपने फ़रमाया, ''जिसकी जितनी अक़्ल होगी उतना उसकी इबादत का सवाब होगा।'' अक़्ल के मेयार के मुताबिक़ इबादतों का सवाब है। जिस दीन में इल्म और अक़्ल की इतनी अहमियत हो वहाँ ज़बरदस्ती मज़हब की तबदीली का कोई सवाल ही नहीं है।

पिछले मज़मून में इस हक़ीक़त की तरफ़ इशारा हो चुका है कि इस्लाम में जेहाद दिफ़ाई है, शुरुआती नहीं। इस सिलसिले में कुछ क़ुरआनी आयतों को बतौर दलील पेश किया जा रहा है ''अल्लाह के रास्ते में उस से जंग करो जो तुम से जंग कर रहे हैं और हद से आगे न बढ़ो, क्योंकि अल्लाह ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता।'' (सूरए बक़रा, 190) इस आयते करीमा से साफ़ साबित है कि इस्लाम में जंग दिफ़ाई हैसियत रखती है और कुछ मुफ़स्सिरीन के ख़याल में ये पहली आयत है जिसमें मुसलमानों को अपने दिफ़ाअ की इजाज़त दी जा रही है। आयत के दूसरे हिस्से में ताकीद है कि सिर्फ़ उतना ही दिफ़ाअ करो कि जितने की ज़रूरत है। दिफ़ाअ में भी ज़्यादती न करो और हद से आगे न बढ़ो। ये है इस्लाम का निज़ामे अद्लो इंसाफ़ कि दिफ़ाअ की भी सिर्फ़ उतनी ही इजाज़त है कि जितना ज़रूरी है। इस तरह सूरए हज की आयते करीमा है कि जिसके बारे में कुछ मुफ़स्सिरीन कहते हैं कि ये पहली आयत है जिसके ज़रिए मुसलमानों को अपने दिफ़ाअ की इजाज़त मिली है ''जिन लोगों से मुसलसल जंग की जा रही हो, उन्हें उनकी मज़लूमियत की बुनियाद पर जेहाद

की इजाज़त दी गई है और यक़ीनन अल्लाह उनकी मदद पर क़ादिर है" (सूरए हज, 39) ये आयत रसूल[स०] की बेसत के साढ़े चौदह साल बाद नाज़िल हुई। इसका मतलब है कि इतनी मुद्दत तक मुसलमान काफ़िरों और मुश्रिकों के ज़ुल्म बर्दाश्त करते रहे और उनको दिफ़ाअ की इजाज़त भी न थी। इस आयत से पहले 70 आयतों में अल्लाह ने मुसलमानों को दिफ़ाअ से भी मना फ़रमाया था। जब ज़ुल्म हद से बढ़ गया और मुसलमानों की मज़लूमियत अपनी इन्तेहा पर पहुँच गई तो अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दिफ़ाअ की इजाज़त दी। इस आयत से पूरे तौर पर साबित हो जाता है कि इस्लाम में जंग की नौईयत दिफ़ाई है। दिफ़ाअ की इजाज़त है, हमले में शुरुआत करने की इजाज़त नहीं है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 28 जनवरी 2010[ई०])

(6)

इस से क़ब्ल के मज़मून में जेहाद के मौज़ू पर बात हुई और ये बात साबित हुई कि इस्लाम पर ये एतेराज़ बिल्कुल ग़लत है कि ये दीन ग़ैर मुस्लिमों को बर्दाश्त करने का क़ायल नहीं और कुरआनी हुक्म है कि जहाँ काफ़िरों और मुश्रिकों को पाओ क़त्ल कर दो। ये ख़याल या तो ग़लत मानी पर मबनी है या जानबूझकर इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश है, जो नबी, नबी-ए-रहमत हो, जिसकी लाई हुई शरीअत, शरीअते रहमत हो, जो उसका नुमाइन्दा हो जो ख़ुद अरहमुर राहेमीन है, उसके लिए हम कैसे यक़ीन कर सकते हैं कि उसके एक हाथ में कुरआन रहता था और एक हाथ में तलवार कि या तो मुसलमान हो जाओ वरना सर क़लम कर दिया जाएगा। जो पत्थर खाने के बाद भी बद्दुआ के बजाए दुआ दे रहा हो "पालने वाले! ये मुझे पहचानते नहीं हैं, इन पर अज़ाब नाज़िल न फ़रमाना" जो रास्ते में कांटे बिछाने वालों को भी बुरा न कह रहा हो, जो फ़त्हे मक्का के मौक़े पर क़ातिलों को माफ़ फ़रमा रहा हो उस से ज़ुल्म व जब्र की उम्मीद हम कैसे कर सकते हैं।

जेहाद के असल माने असलहे से जंग करने, लड़ने और क़त्ल करने के नहीं, बल्कि 'जेहाद' या अरबी के कलमे जुहद से बना है (जीम पर पेश) जिसके माने मेहनत और मशक़्क़त के हैं, यानी किसी भी राह में ज़हमत और मशक़्क़त बर्दाश्त करना जेहाद है। अल्लाह तआला हमारे किसी भी काम का मोहताज नहीं है, वह बेनियाज़ और ग़नी बिज़्ज़ात है। फिर फ़ी सबीलिल्लाह 'अल्लाह की राह में' के क्या माने हैं? उलमा-ए-केराम ने बताया कि जो काम अल्लाह की मर्ज़ी के तहत बन्दों के लिए अंजाम दिया जाए वह सबीलिल्लाह है। अल्लाह पानी नहीं पीता, उसे खाने की ज़रूरत नहीं, मगर किसी प्यासे को पानी पिला दिया या किसी भूके को खाना खिला दिया तो अल्लाह फ़रमाता है कि यही मेरा रास्ता है। ये तुम ने उसको नहीं मुझे पिलाया, उसे नहीं मुझे पिलाया है। अगर किसी मुस्तहक़ के हाथ पर कुछ रक़म रख दी, अल्लाह तआला फ़रमाता है ये मेरी मदद की है। एक मुसलमान का फ़रीज़ा है कि अगर कोई भूका हो तो उसे खाना खिलाए। अगर नंगा हो तो उसके कपड़े का एहतेराम करे, अगर बीमार हो तो तीमारदारी करे, मुसीबत के वक़्त साथ दे चाहे वह इंसान किसी मज़हब से ताल्लुक़ रखता हो। हदीसे शरीफ़ में आया है, अल्लाह तआला क़यामत के दिन एलान फ़रमाएगाः "मैं भूका, प्यासा और बीमार था, लेकिन तुम लोगों ने ध्यान नहीं दिया" बंदे हैरत से कहेंगे पालने वाले तू हर चीज़ से बेनियाज़ है तो ये बात क्यों इरशाद फ़रमा रहा है? अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब आएगा, मेरा फ़लाँ बन्दा भूका था, अगर तुम उसे खाना खिलाते तो मुझे अपने से क़रीब पाते। मेरा फ़लाँ बन्दा प्यासा था, अगर तुम उसे पानी पिला देते तो मुझे अपने से क़रीब पाते। मेरा फ़लाँ बन्दा बीमार था, अगर तुम उसकी तीमारदारी करते तो मुझे अपने से क़रीब पाते। (सही मुस्लिम) इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ०] जब किसी मुस्तहक़ को कुछ देते थे तो पहले इस रक़म को चूमते थे फिर देते थे। लोगों ने वजह पूछी तो फ़रमायाः ये माल उसके हाथ में नहीं जा रहा है। किसी ने इमाम[अ०] से पूछा हमारे पास कुछ नहीं, हम क्या दें? तो फ़रमाया होंट तो हैं, ज़बान तो रखते हो, सिर्फ़ मुस्कुराकर देख लो, यही सदक़ा है। दो

मीठे बोल, बोल दो ये भी सदक़ा है।

या लफ़्ज़े जेहाद अरबी का कलमा जोहद से बना है (जीम पर ज़बर) जिसके माने मक़सद की राह में सारी ताक़त लगा देता है, यानी मशक़्क़त काफ़ी नहीं, बल्कि मक़सद और हदफ़ भी ज़रूरी है और इस्लाम और कम्युनिज़्म में बुनियादी फ़र्क़ नहीं है कि कम्युनिज़्म में सिर्फ़ मक़सद और हदफ़ का सही होना काफ़ी है। इस हदफ़ तक पहुँचने का रास्ता सही या ग़लत कोई भी इख़्तियार किया जा सकता है। इसलिए उनका मशहूर मक़ूला है end justifiles means यानी अगर हदफ़ सही है तो कोई भी रास्ता इख़्तियार करना जाएज़ है, मगर इस्लाम का तसव्वुर इस से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है। यहाँ हदफ़ और मक़सद के साथ-साथ मक़सद के हुसूल का वसीला और ज़रिया भी सही होना चाहिए, इसी लिए दहशतगर्दी नाजाएज़ है, मुमकिन है किसी दहशतगर्द का मक़सद सही हो, मगर उसके हुसूल का जो रास्ता इख़्तियार किया है वह ठीक नहीं है, यहीं पर ख़ुदकश धमाका करने वाले नौजवान धोका खा जाते हैं। मुमकिन है उनका मक़सद और हदफ़ सही रहा हो, मगर जिस तरीक़े कार को उन्होंने इख़्तियार किया है, उसमें 95 फ़ीसद बेगुनाह मारे जा रहे हैं। कभी-कभी कुछ जवान पाकिस्तान या इराक़ में पकड़े गए जो किसी तकनीकी ख़राबी की वजह से अपने को धमाके से उड़ा न सके थे तो देखा गया कि वह ग़ुस्से और मायूसी से अपनी बोटियाँ नोच रहे थे कि तुम ने हमें कितने बड़े सवाब से महरूम कर दिया, हमारे मौलाना ने बताया है कि इस से सैकड़ों को मार कर मरोगे तो रसूल[स०] जन्नत में दस्तरख़्वान पर तुम्हारा इंतेज़ार करेंगे, जब उस से कहा गया कि तुम्हारे इस ख़ुदकश धमाके से सब बेगुनाह मारे जाते तो उसने जवाब दिया कि हमारे मोलवियों ने बताया, इन सारे बेगुनाहों को तो अल्लाह शहादत का दर्जा अता फ़रमाएगा। काश इन बहके हुए गुमराह लोगों को कोई इस्लाम का ये ज़र्रीं उसूल पहुँचा दे कि इस्लाम में सिर्फ़ मक़सद का सही होना काफ़ी नहीं है, बल्कि मक़सद व मंज़िल तक पहुँचने का रास्ता भी सही होना ज़रूरी है।

समाज से नाइंसाफ़ी, ज़ुल्म, बेअदालती और दूसरी बुराईयों को ख़त्म करने की कोशिश करना भी इस्लाम में जेहाद है। यहाँ तक कि जो शख़्स अपने अहलो अयाल की रोज़ी-रोटी के लिए घर से बाहर निकलता है तो उसकी हैसियत मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह की है और उसे हर क़दम पर जेहाद का सवाब मिलता है। इसलिए इरशादे रिसालत है ''अपने अहलो अयाल की मेहनत व मशक़्क़त करने वाला मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह की तरह है'' अगर कोई अपनी या अपने ख़ानदान की इज़्ज़त यहाँ तक कि अपनी जाएदाद की हिफ़ाज़त में अपनी जान दे दे तो उसको भी वही दर्जा है जो जंग के मैदान में शहीद हो जाने वाले का है।

ऊपर दी हुई बातों से साफ़ साबित होता है कि जेहाद के माने क़त्ल करने के नहीं हैं, बल्कि ये जेहाद ज़बान से भी हो सकता है, क़लम से भी, माल से भी और औलाद से भी और मजबूरी में तलवार से भी।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 11 फ़रवरी 2011[ई०])

(जारी)

नियत और अमल

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
हिन्दी रूपः डॉ आरिफ़ अब्बास

किसी अमल के अच्छे और बुरे होने में नियत को बड़ा दख़ल हुआ करता है। कोई अमल देखने में कितना ही अच्छा मालूम होता हो लेकिन अगर उसे अंजाम देने वाले की नियत बुरी है तो वह अमल भी बुरा समझा जाएगा और कोई अक़्लमंद उसकी तारीफ़ नहीं कर सकता इसी तरह अगर अच्छी नियत के साथ कोई काम किया जाए तो काम चाहे बुरा ही क्यों न हो लेकिन लोग उसे करने वाले की बुराई नहीं करते क्योंकि उसकी नियत ख़राब न थी।

मिसाल के तौर पर कोई ख़ैरात करे और नियत ये हो कि उससे जुर्म करने वाले लोगों को मदद मिले और वह ज़्यादा आसानी के साथ जुर्म करें या ये भी न सही तो सिर्फ़ इस ग़रज़ से ख़ैरात दी जाए कि लोग ऐसे शख़्स की तारीफ़ करें और उसकी ख़ूब नुमाइश और शोहरत हो यानी इस काम में जो जज़्बा काम कर रहा हो वह किसी की मदद और उस से हमदर्दी का नहीं बल्कि अपने ज़ाती नाम और शोहरत का हो तो ऐसे अमल की हरगिज़ तारीफ़ नहीं की जा सकती इसी तरह अगर किसी शख़्स ने इंतेहाई ख़ूलूस और पूरी हमदर्दी के साथ किसी गिरते हुए आदमी को संभालने की भरपूर कोशिश की मगर उससे फ़ाएदे के बजाए नुक़सान पहुँच गया तो ऐसे मदद करने वाले शख़्स की कोई बुराई नहीं कर सकता जिसने पूरी सच्ची नियत के साथ उसको बचाने की कोशिश की थी। सिर्फ़ इसलिए कि उसकी नियत नेकी की थी। कुरआने हकीम में जगह-जगह नियत के साथ नेक अमल पर ज़ोर दिया गया है। आईये! कुरआन पाक के शुरु में देखें हमें अल्लाह का ये इरशाद बड़ी वज़ाहत के साथ मिलता है, तर्जुमाः- ''इस किताब यानी कुरआने हकीम में कोई शक और शुब्हा नहीं है। बेशक ये परहेज़गार लोगों के लिए हिदायत है जो ग़ैब पर ईमान रखते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं।'' जिसका मतलब ये है कि वह नमाज़ को पाबन्दी के साथ अदा करते हैं फिर इरशाद हुआ कि ''वह लोग ऐसे हैं कि जो कुछ हम ने उन्हें रोज़ी दी है उसको भी वह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर देते हैं वह लोग ऐसे हैं जो उन तमाम चीज़ों पर ईमान रखते हैं (जो ऐ रसूल[स०]) तुम पर नाज़िल की गई हैं और उन चीज़ों पर भी जो तुमसे पहले नाज़िल की गई थीं और वह हिसाब के दिन पर भी पूरा-पूरा यक़ीन रखते हैं ऐसे ही लोग अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।'' (सूरए बक़रा)

आयतों के इस तर्जुमे से ये बात पूरी वज़ाहत से हमारे सामने आ जाती है कि इस्लाम का नज़रिया ये है कि नियत के साथ अमल और अमल के साथ नियत भी ज़रूरी है। ये और बात है कि किसी बड़ी रुकावट की वजह से किसी वक़्त अमल का वुजूद न हो सके लेकिन अमल का जज़्बा, अमल का इरादा और अमल के लिए भरपूर मुस्तएदी का होना हर हाल में ज़रूरी है।

कुरआन और हदीस में इस बात के सुबूत में बहुत से वाक़िआत और बातें मिलेंगी जहाँ नियत का वुजूद है मगर अमल का वुजूद नहीं है लेकिन कहीं पर ये न मिलेगा कि जज़्ब-ए-अमल और अज़्मे अमल भी मौजूद न हो।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पूरे वाक़िआत को देख लीजिए हर जगह सिर्फ़ उनके इल्मो मारेफ़त ही का ज़िक्र मिलेगा और किसी जगह भी इसका तज़किरा नहीं किया गया कि उन्होंने किस-किस तरह इबादत की थी मगर मन्सबे नुबुव्वत उन्हीं को मिला इसलिए कि उनमें इल्म की ज़्यादती के साथ अमल का इरादा भी था और

वह इस बात के लिए पूरी तरह मुस्तएद और तैयार थे कि जब और जो कुछ भी अल्लाह का हुक्म होगा फ़ौरन वह उस पर अमल करेंगे। ज़ाहिर सी बात है कि एक सच्चा मुसलमान और पक्का मोमिन दिन और रात के हर लम्हे में तो नेक अमल में मशग़ूल नहीं रहता और रह भी नहीं सकता वह कभी सो जाता है तो कभी बेकार बैठा रहता है मगर अमल का इरादा उस से कभी अलग नहीं होता। हमारे सामने इस बात की भी मिसालें मौजूद हैं जहाँ अमल का वुजूद बिल्कुल ही नहीं हो सका और सिर्फ़ मुस्तएदी और अमल का इरादा ही था मगर अल्लाह की बारगाह में सिर्फ़ नियत को जबकि वह अमल के इरादे के साथ जुड़ गई थी क़ुबूलियत का दर्जा अता फ़रमा दिया गया। मुस्नद अहमद और हदीस की दूसरी किताबों में मौजूद है कि ओहद की जंग में अम्र बिन साबित बिन वक़्श इस्लाम लाने के बाद फ़ौरन काफ़िरों के लश्कर से लड़े और शहीद हो गए जबकि उन्होंने एक सज्दा भी उस वक़्त तक नहीं किया था। और हुज़ूरे अनवर[स०] ने उनकी शहादत की ख़बर सुनकर फ़रमाया कि अम्र बिन साबित शहीद हैं और जन्नत वालों में से हैं। सरवरे काएनात ने एक हदीस में फ़रमाया कि "हर शख़्स के अमल की हैसियत उसके इरादे और नियत से जुड़ी होती है।" दूसरी हदीस में है "अमल के मेयार का तअय्युन नियतों के मुताबिक़ हुआ करता है।"

इसी नुक़्त-ए-नज़र की तरफ़ रसूल[स०] की इस हदीस में भी खुले तौर पर इशारा मौजूद हैः "अगर शरई हाकिम किसी हुक्म देने में पूरी तहक़ीक़ व इज्तेहाद से काम ले और इसके नतीजे में सही और ठीक फ़ैसले तक पहुँच जाए तो उसके लिए अल्लाह के रास्ते में दुगना सवाब मिलेगा लेकिन अगर उस हाकिम व मुजतहिद को बहुत कोशिश के बाद और मुख़लिसाना कोशिश के बाद ठीक फैसले तक न पहुँच सके बल्कि ऐसे फ़ैसले तक पहुँच हासिल हो जो उसकी नज़र में तो सही हो मगर हक़ीक़त में ग़लत हो जब भी उस मुजतहिद व हाकिम को कम से कम एक अज्र ज़रूर मिलेगा क्योंकि फ़ैसला चाहे हक़ीक़त और असलियत में गलत ही क्यों न हो मगर उसने सच्ची नियत और सच्चाई के साथ कोशिश तो ज़रूर की है। ग़रज़ अमल की हैसियत की पहचान का इन्हेसार नियत पर है और नियत की अहमियत और वज़न, अमल या जज़्ब-ए-अमल से जुड़ा है जिसका खुलासा ये हुआ कि वह अमल जो बिना इरादे और बग़ैर नियत के हो कोई भी क़ीमत नहीं रखता, और वह नियत जो अमल के साथ जज़्बे और इरादे की हद तक भी जुड़ी न हो, कोई भी हैसियत और अहमियत नहीं रखती।

जज़ा और सज़ा का ताल्लुक़ उन ही आमाल से है जिनमें नियत और इरादा शामिल हो या उन नियतों से है जिनमें कम से कम इरादे और जज़्बे की हद तक भी अमली रुख़ पाया जाता हो। रोज़े में अगर पानी पीने का एक क़हरी और अचानक ख़याल आ जाए जबकि न तो पीने का इरादा ही हो और न पिया ही जाए तो न यह ख़याल गुनाह है और न इस से रोज़ा टूट सकता है लेकिन अगर इस ख़याल और तसव्वुर को नियत और इरादे की हैसियत भी हासिल हो जाए और रोज़ेदार ये तै कर ले कि अब मैंने रोज़ा ख़त्म कर दिया और बस खाना पानी इस्तेमाल करना अनक़रीब शुरु कर दूँगा तो उसका रोज़ा बाक़ी नहीं रह सकता चाहे कुछ न खाए और कुछ न पिये। इसी तरह अगर कोई ज़िंदगी भर नमाज़ें पढ़ता रहे और नियत न हो कि वह नमाज़ पढ़ता है बल्कि उसकी नियत हो कि वह एक क़िस्म की वर्ज़िश कर रहा है तो ऐसी नमाज़ क़तई तौर पर बेकार है और वह हरगिज़ इस्लामी नमाज़ न होगी।

इसी तरह अगर कोई ग़ैर मुस्लिम यानी मुश्रिक और काफ़िर सिर्फ़ क़ुरआनी आयतें और उनके मतलब मालूम कर ले या उनकी अपने ख़याल में रद् करने के लिए, क़ुरआन पाक को पढ़ने लगे तो ज़ाहिर है कि इस क़िराअत का सवाब से कोई जोड़ ही नहीं हो सकता बल्कि सवाब उस मुसलमान को मिलगा जो उसे अल्लाह का कलाम समझ कर पढ़ेगा। इसी नुक़त-ए-नज़र पर जब हम क़ुरआन और हदीस का ग़ौर से मुताला करेंगे तो हमें हर जगह नियत और अमल से वाबस्तगी मिलेगी। और हक़ीक़त तो ये है कि ख़ुद नियत के मतलब ही में अमल का पहलू शामिल होता है इस तरह अगर किसी बात के ख़याल में अमल या जज़्ब-ए-अमल का

सिरे ही से वुजूद न हो तो वह ख़याल किसी हैसियत से भी नियत नहीं कहा जा सकता। अल्लामा अबूजाफ़र तूसी ने इस बात को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया हैः यानी नियत से मुराद है किसी काम के करने का इरादा, और ये इरादा इल्म और अमल के दरमियान एक वास्ते की हैसियत रखता है इसलिए कि जब तक कोई बात इल्म में न आएगी उस वक़्त तक उसको अमल में लाने का इरादा यानी नियत मुमकिन ही नहीं हो सकता। इसका नतीजा ये निकलता है कि नियत सिर्फ़ ख़याल और तसव्वुर का नाम नहीं है बल्कि उस ख़याल का नाम है जिसके साथ इरादा भी हो चाहे वह इरादा अमल की सूरत इख़्तियार कर सके या सिर्फ़ सच्चाई के जज़्बे तक ही महदूद रहे।

आईये हम एक बार फ़िर क़ुरआनी आयतों पर नज़र डालें सूर-ए-हुजरात में अल्लाह का इरशाद हैः तर्जुमाः यक़ीनन सच्चे मोमिन वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आए और उस ईमान के बाद उनके दिलों में कभी शक और शुब्हा नहीं पैदा हुआ और साथ ही उन्होंने अपने माल व जान के साथ अल्लाह के रास्ते में जेहाद किया। यही लोग सादिक़ीन यानी सच्चे ईमानदार हैं।'' देखिये यहाँ भी ईमान की एक शर्त नफ़्स और माल के जेहाद को क़रार दिया गया है। इस जगह पर ये बात साफ़ रहे कि इस जेहाद से सिर्फ़ जंग के मैदान की लड़ाई मुराद नहीं है बल्कि इस से ख़ुदा के अहकाम पर अमल करने की हर वह कोशिश मुराद है जिसका ताल्लुक़ मुस्लिम मर्द की ज़िंदगी के किसी रुख़ या किसी मैदान से क्यों न हो, एक दूसरी आयत सूर-ए-निसाः 124 में है, तर्जुमाः ''और जो कोई नेक आमाल करेगा चाहे मर्द हो या औरत हो जबकि वह मोमिन भी हो तो ऐसे सब लोग जन्नत में दाख़िल होंगे।'' यहाँ जन्नत में दाख़िल होने की शर्त ईमान है और ईमान व नेक अमल दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं। यानी नेक अमल ईमान से पूरा होगा और खुद ईमान फ़ायदेमंद और असरदार सिर्फ़ उसी वक़्त होगा जबकि उसके साथ नेक अमल या नेक अमल का जज़्बा और ताक़त मौजूद हो। इस सिलसिले में एक वाक़िए के ज़िक्र से इस बात की और वज़ाहत होगी, ख़ंदक़ की जंग में जब शेरे ख़ुदा अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] अम्र बिन अब्देवुद से सीने पर आए और चाहा कि उसका सर अलग कर दें। ठीक उसी वक़्त उसने आपकी मुबारक शान में बहुत ही गंदे अलफ़ाज़ कहे और आपकी तरफ़ थूक कर बेअदबी भी की। सरवरे काएनात और अस्हाबे केराम दूरे से ये सब कुछ देख रहे थे। हज़रत अमीरुलमोमिनीन[अ०] ने उसको फ़ौरन छोड़ दिया और उसके सीने से उतार आए और थोड़ी देर के बाद फिर उसके पास जाकर उसके सर को जुदा कर दिया। वापसी पर जब हुज़ूर[स०] ने आपसे पूछा कि पहली बार तुम ने अली[अ०] उसे क्यों छोड़ दिया था तो आपने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल[स०] उसके बेअदबी से मुझे गुस्सा आ गया था। अगर मैं उस वक़्त उसे क़त्ल करता तो मेरी नियत बदले की होती और ये क़त्ल अल्लाह के लिए न होता इसलिए मैंने सब्र से काम लिया ताकि मेरा ये अमल सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो और मेरी नियत में कोई दूसरा जज़्बा न आने पाए।

लड़ने के लिए बहाना चाहिए...? जी नहीं

जनाब शकील हसन शमसी साहब "राष्ट्रीय सहारा" देहली

बचपन में एक मज़ेदार क़िस्सा सुना था कि दो औरतें बहुत देर से जाड़े की धूप में लेटी धूप का मज़ा ले रही थीं और इस तरह जब लेटे-लेटे काफ़ी देर हो गई तो एक ने दूसरी से कहा कि ऐ बहन ख़ाली लेटे-लेटे क्या करूँ? दूसरी ने कहा आओ बहन लड़ें... बस इतना कहना था कि पहली औरत बोली मैं क्यों लड़ूँ... लड़े मेरी बला... दूसरी औरत ने कहा तूने मुझे बला कहा? और फिर दोनों के दरमियान ऐसी लड़ाई छिड़ी कि दोनों ख़ानवादे आमने-सामने आ गए और फिर गाँव का गाँव लड़ने लगा। ऐसा ही हाल कुछ मुसलमानों का भी है, जिनको लड़ने के लिए किसी बहाने की ज़रूरत भी नहीं बग़ैर किसी वजह और बग़ैर किसी सबब के वह लड़ने लगते हैं। इस बार के यौमे आशूरा के मौक़े पर कई जगहों पर मुसलमानों के दरमियान कुछ ऐसे ही झगड़े हुए, जिनमें कोई ख़ास वजह नहीं थी, छोटी-छोटी बातों को बहाना बना लिया गया।

कानपुर में देवबंदी बरेलवी में झगड़ा हो गया तो लखनऊ में हमेशा की तरह शिया-सुन्नी फ़साद करवाने की हर मुमकिन कोशिश की गई और वहाँ सुन्नी फ़िरक़े के लोग भी आपस में भिड़े, अमरोहा जैसे अम्न वाले इलाक़े में कशीदगी पैदा की गई, बिजनौर के एक क़स्बे सैदपुर में भी बग़ैर किसी वजह से मुसलमानों के दरमियान फ़साद हो गया। सीतापुर के तारीख़ी क़सबे महमूदाबाद में अशर-ए-मुहर्रम के दौरान काफ़ी कशीदगी रही और कई बार हालात इतने ख़राब हो गए कि पुलिस को बीच-बचाव करना पड़ा। इसके अलावा कई जगहों पर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच भी तनाव पैदा हो गया और बदतरीन फ़सादों का शिकार बनने वाले गुजरात के शहर अहमदाबाद में मुहर्रम के जुलूसों को लेकर झगड़ा हो गया। सवाल ये उठता है कि यौमे आशूरा जो क़ुरबानी, ईसार, सब्र और क़ुव्वते बर्दाश्त का सबक़ याद करने का दिन है, उस दिन हम अपनी फ़िक्र का दायरा इतना तंग क्यों कर लेते हैं कि ज़रा-ज़रा सी बात पर लड़ने-भिड़ने को तैयार हो जाते है?

यहाँ पर मैं किसी और शहर का ज़िक्र नहीं करना चाहता, क्योंकि मैं वहाँ मौजूद नहीं था, लेकिन लखनऊ के तमाम वाक़िआत मेरी निगाहों के सामने हैं, इसलिए वहीं का तज़किरा करना चाहूँगा। पहली मुहर्रम से नौ मुहर्रम तक लखनऊ की फ़ज़ा बिल्कुल नॉरमल थी। सब लोग मुतमइन थे कि मुहर्रम बहुत सुकून के साथ गुज़र रहा है। उस नाम नेहाद शिया-शिया लड़ाई का भी दूर तक कोई निशान नहीं था, जिसको मुहर्रम से कुछ दिन पहले हवा देने की काफ़ी कोशिश की गई थी। सुन्नी और शिया फ़िरक़े के दरमियान ज़बरदस्त इत्तेहाद की फ़िज़ा थी, सुन्नियों की तरफ़ से कई जगह चाय की सबीलें लगाई गई थीं। बाज़ारों में चहल-पहल थी और पुलिस के गश्त के बावजूद तनाव नहीं था। जैसे शिया और सुन्नी फ़िरक़े के वह पुराने खिलाड़ी जो हमेशा एक दूसरे के अक़ीदों पर तंज़ करने में लगे रहते हैं, इस बार भी लगे रहे, लेकिन उनकी मजलिसों या जल्सों में कही जाने वाली दिल को दुखाने वाली बातों का असर लखनऊ की आम ज़िंदगी पर नहीं पड़ा। आशूर का दिन भी मुकम्मल सुकून के साथ गुज़र गया सब मुतमइन थे कि चलो मामलात बहुत सुकून के साथ निपट गए।

लखनऊ में यौमे आशूर का सबसे बड़ा प्रोग्राम माह नगर की कर्बला में होता है (जिसको अब महानगर कहा जाता है) जहाँ सुबह से शाम तक एक भीड़ रहती है। ये कर्बला लखनऊ के सुन्नियों की सबसे बड़ी कर्बला है, यहाँ आशूर के दिन कम से कम 4 लाख लोग ताज़िये के जुलूसों के साथ आते हैं। इसके अलावा सुन्नियों का दूसरा सबसे बड़ा इज्तेमाअ बंगला बाज़ार की कर्बला में होता है। तीसरा बड़ा इज्तेमाअ फूल कटोरा में होता है। इन सब ही जगहों पर सुन्नी मसलक के लोग अपने-अपने ताज़िये दफ़न करने आते हैं। मैं दोपहर में महानगर की कर्बला गया तो वहाँ का मंज़र देखकर हैरान रह गया। यहाँ ताज़िये के साथ दफ़ और नक़्क़ारे तो बज ही रहे थे साथ ही साथ कई लोग ज़ंजीरों का मातम भी कर रहे थे। यहाँ एक नया अंदाज़ ये देखने में आया कि बिजली के पुराने ट्यूब सर पर फोड़ने का मुज़ाहेरा करने वाले नौजवान भी ताज़ियों के साथ चल रहे थे उनमें से बहुत लोगों के माथे से ख़ून बह रहा था। ये सब लोग इमाम हुसैन के सब्र व इस्तेक़लाल, हिम्मत और हौसले को सलाम पेश कर रहे थे, लेकिन जब हक़ीक़ी ज़िंदगी में कुव्वते बर्दाश्त के मुज़ाहरे का मामला सामने आया तो कुछ लोग इस कसौटी पर खरे न उतर सके और एक-दूसरे से ताज़िया आगे निकाल ले जाने के मामले पर उलझ गए और मारपीट पर तैयार हो गए। हंगामे को रोकने के लिए पुलिस को बीच में आना पड़ा, लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि ये झगड़ा मेरे सामने नहीं हुआ, बल्कि मैंने इसकी ख़बर दूसरे दिन अख़बार में पढ़ी।

शियों का सबसे बड़ा इज्तेमाअ तालकटोरा में मीर खुदा बख़्श की कर्बला में होता है, जहाँ पिछले ज़माने से शिया अंजुमनें अपने जुलूसों के साथ पहुँचती थीं, लेकिन 1977 के शिया-सुन्नी फ़साद के बाद ये सिलसिला तक़रीबन 20 बरस तक कर्बला के अंदर ही महदूद रहा और फिर 1997 में शिया और सुन्नी फ़िरक़ों के दरमियान मुआहदे के बाद से तमाम अंजुमनों का एक मुश्तरका जुलूस नाज़िम साहब के इमामबाड़े से उठकर ताल कटोरा तक जाने लगा। ये जुलूस ख़ैर और आफ़ियत के साथ कर्बला पहुँच गया और जुलूस में शरीक होने वाले शहर में होने वाले ख़ास प्रोग्राम फ़ाक़ा शिकनी में शरीक होने लगे। सब मुतमइन थे कि हर तरफ़ सुकून रहा, लेकिन अभी इत्मिनान की ये घड़ियाँ अपने नुक़्त-ए-कमाल को नहीं पहुँची थीं कि अचानक 4 बजे शाम को नारों की आवाज़ से पुराने शहर का वह इलाक़ा गूँजने लगा जहाँ मेरा घर है। मुझे ताज्जुब हुआ कि ऐ अल्लाह ये क्या हुआ? बाहर सड़क पर निकल कर देखा तो नौजवानों का एक गिरोह फ़साद करवाने की ग़रज़ से इश्तेआल अंगेज़ी में लगा है। उनकी हरकतों की वजह से भगदड़ सी मची हुई थी। ये गिरोह कह रहा था कि फ़लाँ महल्ले में इतने लोग मार दिये गए फ़लाँ महल्ले में इतने खीच लिए गए। मुझे ऐसा लगा कि एक ख़ास गिरोह की जानिब से अफ़वाहों और झूठी ख़बरों को बुनियाद बनाकर फ़साद करवाने की साज़िश रची गई है। इस गिरोह पर क़ाबू पाने के लिए मैंने महल्लों के बहुत से नौजवानों को साथ लिया और मुशतइल गिरोह को विक्टोरिया स्ट्रीट छोड़कर जाने पर मजबूर किया। बाद में कई दूसरे इलाक़ों से ऐसी ख़बरें आईं कि सुन्नी अक्सरियती इलाक़ों में शिया नौजवानों को घेर कर मारा गया और शिया अकसरियत वाले महल्लों में अकेले निकलने की हिम्मत करने वाले सुन्नी राहगीरों पर हमला किया गया, लेकिन हर जगह से अच्छी ख़बर ये थी कि हर जगह फ़साद की कोशिशों को नाकाम बनाने वाले ज़्यादा थे और फ़साद करवाने की कोशिश करवाने वालों की तादाद बहुत कम थी। इसी वजह से बिना पुलिस की मौजूदगी के हालात कई जगह पर क़ाबू में रहे। पुलिस का मौक़े पर मौजूद न होना भी ठीक ही रहा क्योंकि पुलिस दोनों गिरोहों को मुन्तशिर करने के लिए लाठी चार्ज करती तो हालात कुछ ज़्यादा ही बिगड़ते। कई हस्सास इलाक़ों में नारेबाज़ी हुई और देर रात तक इसका सिलसिला जारी रहा, जिसकी वजह से ज़िला हुक्काम ने मजलिसे शामे ग़रीबाँ को मंसूख़ किए जाने की राय दी, जिसको मुन्तज़िमीन ने मंज़ूर नहीं किया अलबत्ता तनाव की वजह से इस तारीख़ी मजलिस में हाज़िरीन की तादाद ज़रूर कम हो गई। इस मजलिस के बाद भी कुछ लोगों ने

शेष... पेज 14 पर

मक़्तूलः फ़ातेहे आज़म

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़्वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द
हिन्दी रूपः डॉ० आरिफ़ अब्बास

वाक़िअ-ए-कर्बला से पहले आम तसव्वुर ये था कि फ़तह के लिए लश्कर ज़रूरी है, असलहों के ज़ख़ीरे लाज़िम हैं, क़तार दर क़तार फ़ौज हो जो मुख़ालिफ़ों को तहस-नहस कर दे, उनको मिटा दे, उनके अफ़राद असीर हो जाएं तो क़त्ल होने वाले लुटने वाले, क़ैदी बन जाने वाले मफ़तूह कहलाते थे और क़त्ल करने वाले, लूटने वाले, क़ैदी बनाने वाले फ़ातेह के लक़ब से सरफ़राज़ होते थे लेकिन इमाम हुसैन[अ०] ने फ़त्ह और शिकस्त का मेयार ही बदल दिया और तारीख़ के धारे का रुख़ मोड़ दिया, क़त्ल होकर भी, लुटकर भी, क़ैदी बन कर भी फ़त्ह हासिल की जा सकती है और वह भी वक़्ती नहीं बल्कि अबदी फ़त्ह, अगर आप मेरी बात पर ग़ौर करें तो आपको मालूम होगा कि याद हमेशा जीतने वाले की बाक़ी रहती है हारने वालों का नामो निशान मिट जाता है, न तो कोई हारने वालों की याद में जलसे करता है न जुलूस निकाले जाते हैं। दुनिया में अगर कहीं निकलते हैं तो बस Victory Processions निकलते हैं या जीत का जश्न मनाया जाता है। आपको इंसानी तारीख़ में कहीं नहीं मिलेगा कि हारने वालों की याद में कोई प्रोग्राम मुनअक़िद हुआ। ये बात इंसान की फ़ितरत में शामिल है कि वह जीत की याद मनाता है। इमाम हुसैन की याद में गली-गली में उठने वाले जुलूस और गाँव-गाँव में मुनअक़िद होने वाली मजलिसें इस बात का सुबूत हैं कि इमाम हुसैन ने कर्बला की जंग में यज़ीदी फ़ौज को हर तरह से बुरी शिकस्त दी। आज दुनिया में कहीं कोई यज़ीद की याद मनाने वाला नहीं, लेकिन इमाम हुसैन[अ०] की याद मनाने वाले हर जगह मौजूद हैं। जिस से इस बात का अंदाज़ा लगाना आसान है कि कर्बला में जीत किसकी हुई। कर्बला की ये जंग ऐसी अकेली जंग है, जिसमें ख़ंजरों को गरदनों ने मात दी, कर्बला की जंग एक ऐसी जंग है, जिसमें तलवार पर गले के ख़ून को कामयाबी मिली, कर्बला की जंग एक ऐसा मारका है, जिसमें नेज़ों को सीनों ने मोड़ दिया, कर्बला एक ऐसा वाहिद वाक़िआ है, जिसमें तश्नगी ने पानी को मात दी, कर्बला की जंग में असलहों को नहीं क़ुव्वते बर्दाश्त को जीत मिली, कर्बला के मैदान में फ़ौज की कसरत को नहीं इस्तेक़ामत की जीत हुई।

कर्बला से पहले क़ैद करने वाले ख़ुद को आज़ाद मान रहे थे और क़ैदी बनाए गए लोगों को क़ैदी समझ रहे थे लेकिन कर्बला के वाक़िए के बाद हमेशा की क़ैद मिली यज़ीदी फ़ौज को, और हमेशा की आज़ादी मिली कर्बला के उन असीरों को जिनके हाथों में रस्सी बाँध कर ज़ालिम लश्कर ये समझता था कि उसने मज़लूमों को क़ैद कर लिया। यज़ीद और उसके गर्वनर इब्ने ज़ियाद को कहाँ मालूम था कि रसूले अकरम[स०] के जिस मोहतरम नवासे को वह क़त्ल करने जा रहा है, उसके लिए ये अमल एक लानत का तौक़ बन जाएगा।

कर्बला की जंग से पहले भी बहुत सी इस्लामी जंगें हुईं, उन जंगों में मुसलमानों को अपनी ताक़त और सदाक़त के बलबूते पर कामयाबी मिली। रसूल[स०] को तो छोटी-बड़ी 86 लड़ाईयों में कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों से टकराना पड़ा, लेकिन कर्बला की जंग और ग़ज़वाते रसूल[स०] में एक बड़ा फ़र्क़ ये था कि रसूल[स०] ने जितनी जंगे लड़ीं, उसमें उन्होंने अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों को जंग के मोर्चे की पहली सफ़ों में रखा और अपने अस्हाब को पीछे की सफ़ों में, क्योंकि रसूले अकरम[स०]

चाहते थे कि उनके ख़ानदान वाले ज़्यादा मुसीबतें बर्दाश्त करें और सहाबा को कम से कम ख़तरों का सामना करना पड़े, यानी इस्लाम भी बच जाए और उनके ज़्यादा साथियों की जानें भी बरबाद न हों, लेकिन इमाम हुसैन[अ॰] जब इस्लाम को बचाने के लिए कर्बला के मैदान में आए तो उन्होंने अपने लश्कर को इस तरह तरतीब दिया कि अस्हाब और साथी सबसे आगे थे और अज़ीज़ व रिश्तेदार उनके पीछे थे। इस की वजह ये थी कि कर्बला में जो सब से ज़्यादा देर तक ज़िंदा रहता उसको उतनी ही मुश्किलों का ज़्यादा सामना करना पड़ता। जो सबसे पहले मौत को गले लगाता उसको प्यास की शिद्दत से उतनी जल्दी नजात मिलती और रसूल[स॰] के हाथों जामे कौसर अता होता। कर्बला में हर लम्हा इम्तिहान था, हर पल एक नई मुसीबत की आमद थी, ऐसे में इमाम हुसैन[अ॰] ने अपनी जंग के लिए यही हिक्मते अमली मुनासिब समझी कि अस्हाब और दोस्त पहले शहीद हों और गोद के पाले और दिल के टुकड़े बाद में शहीद हों और सबसे आख़िर में ख़ुद इमाम हुसैन[अ॰] ने इस्लाम पर अपनी जान निसार करके इस्लाम की फ़तह की ऐसी तारीख़ लिखीं, जिसमें मज़लूमियत के रंग भरे हैं। इस तस्वीर में उनके छः माह के दूध पीते हज़रत अली असग़र[अ॰] की गर्दन से बहता हुआ ख़ून, कड़ियल जवान अली अकबर[अ॰] के सीने से उबलता ख़ून, जवान भाई हज़रत अब्बास[अ॰] के कटे हाथों से टपकता हुआ ख़ून, भांजों और भतीजों के जिस्मों के पाक बदन से गिरती हुई सुर्ख़ बूँदें शामिल हैं। इसी वजह से उस वक़्त तक हारजीत के जो उसूल और क़ाएदे थे, वह बदल गए, इमाम हुसैन[अ॰] के अज़ीज़ और रिश्तेदार और अस्हाब व अंसार की कुर्बानियों ने कर्बला के बाद जंग की जीत का मेयार बदल दिया। यहाँ ख़ून बहाने वाले कामयाब नहीं हुए, बल्कि ख़ून के क़तरों ने हुसैनी फ़तह की दास्तान वक़्त के माथे पर लिखा। हालांकि कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि यज़ीद को वक़्ती तौर पर जीत मिल गई थी और अक्सर लोग इस ग़लतफ़हमी का शिकार भी रहे कि यज़ीद को कर्बला में ज़ाहिरी तौर पर जीत मिल गई थी, चुनानचे एक हिन्दू शायर दिवाकर राही का एक शेर भी इस सिलसिले में मौजूद है जो कहते हैं कि:

वक़ारे ख़ूने शहीदाने कर्बला की क़सम
यज़ीद मोर्चा जीता है जंग हारा है

लेकिन मैं उनकी राय से इत्तेफ़ाक़ नहीं करता, क्योंकि यज़ीद को कर्बला में न तो ज़ाहिरी तौर पर जीत मिली न बातिनी तौर पर, न तो वह मोर्चा जीत सका न जंग में ही उसको कामयाबी नसीब हुई, क्योंकि इस बार जंग का अंदाज़ बदला हुआ था, इस बार शिकस्त व फ़तह का फैसला इस बात से नहीं होना था कि कौन एक बड़े लश्कर के ज़रिए एक छोटी सी टुकड़ी पर ग़लबा हासिल कर सका, बल्कि फैसला इस बात पर टिका था कि कौन अपने मक़सद में कामयाब रहा। यज़ीद की हार का इससे बड़ा एलान क्या होगा कि ख़ुद उसके बेटे ने उसका जानशीन बनने से इंकार कर दिया। इतना ही नहीं जब यज़ीद को इस बात का एहसास हुआ कि इस्लामी दुनिया में हर तरफ़ से उस पर लानत और मलामत हो रही है तो उसने इमाम हुसैन[अ॰] के क़त्ल को अपने फ़ौजी सरदारों के सर थोपने की नाकाम कोशिश की। आले रसूल[स॰] का ख़ून बहाकर यज़ीद ने अपनी हुकूमत को क़ुबूल करवाने की जिस तरह कोशिश की थी, उसका अंजाम इतना हैबतनाक होगा, यज़ीद ने कभी ख़्वाब में भी नहीं सोचा था।

ये जो जगह-जगह ताज़ियों के साथ कर्बला के शहीदों की याद में लोग मातम करते चल रहे हैं, ये जो दफ़ और दूसरे जंगी बाजे मुहर्रम के जुलूसों में नज़र आ रहे हैं, ये इस बात को बताते हैं कि यज़ीद अपने मक़सद में कामयाब नहीं हो सका। रसूले पाक[स॰] के नवासे ने उस वक़्त की सुपर पावर को इस तरह मात दी कि दुनिया को कहना पड़ा कि........

यज़ीद डूब गया शाम के अंधेरे में
हुसैन[अ॰] आज भी ज़िंदा हैं हर सवेरे में

यहाँ मैं कहना ज़रूरी समझता हूँ कि कुछ लोग कहते हैं कि अल्लाह की पनाह इमाम हुसैन[अ॰] हुकूमत पर क़ब्ज़ा करना चाहते थे या इक़्तेदार की तलब में घर से निकले थे, लेकिन ये बात बिल्कुल ग़लत है, क्योंकि अगर इमाम हुसैन[अ॰] का मक़सद ये होता तो वह ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को अपने साथ लाते, लेकिन मदीने से

लेकर शबे आशूर तक इमाम हुसैन[अ०] ने हर क़दम पर यही कोशिश की कि उनके साथ कम से कम लोग हों, लेकिन जो भी हों वह ऐसे हों, जिनका जवाब ये दुनिया न ला सके। इमाम हुसैन[अ०] जिन बहत्तर साथियों को कर्बला के मैदान में लाए थे वह बहत्तर का अदद नहीं था, बल्कि बहत्तर इकाईयाँ थीं, जिनको इमाम हुसैन[अ०] ने बराबर से लाकर खड़ा कर दिया था, क्योंकि बहत्तर इकाईयों को अगर किसी काग़ज़ पर बराबर लिख दिया जाए तो इतना बड़ा अदद बन जाएगा जिसका हिसाब कोई कल्कुलेटर नहीं लगा पाएगा, इमाम हुसैन[अ०] का हर सिपाही अज़्म व इस्तेक़लाल की एक ऐसी इकाई था, जिसका कोई जवाब नहीं था, इस लिए उनको सिर्फ़ बहत्तर अफ़राद की शक्ल में नहीं देखा जा सकता, बल्कि उनको एक इकाई की शक्ल में रखा जाना चाहिए। इमाम हुसैन[अ०] अपने साथ सब्र के वह नमूने लाए थे जिनको एक फ़र्द की शक्ल में देखा ही नहीं जा सकता इसलिए बहत्तर अफ़राद पर मुश्तमिल ये लश्कर एक लाख के लश्कर से यूँ टकराया कि अबरहा की फ़ौज की तरह यज़ीद की फ़ौज की धज्जियाँ उड़ गईं। इमाम हुसैन[अ०] के बहत्तर सिपाहियों ने यज़ीद की फ़ौजों को ऐसी हार दी कि उसका नाम और निशान बाक़ी नहीं रहा और हुसैनियत का परचम आज तक लहरा रहा है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा, (उर्दू) 17 दिसम्बर 2010[ई०])

शेष..... लड़ने के लिए बहाना चाहिए...? जी नहीं

माहौल को बिगाड़ने की कोशिश की, लेकिन अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है कि लखनऊ के मुसलमान एक दूसरे का ख़ून बहाने पर तैयार नहीं हुए। कहीं पर फ़सादी तबक़ा फ़साद करवाने में कामयाब नहीं हो सका। इश्तेआलअंगेज़ नारों के ज़रिए शहर की फ़ज़ा ख़राब करने और एक दूसरे के ख़िलाफ़ ज़हर उगल कर फ़साद करवाने की ये चाल भी नाकाम हो गई, लेकिन अफ़वाहों ने पुराने लखनऊ में रहने वालों की नाक में दम कर दिया। हर मिनट पर कहीं न कहीं से फ़साद होने या किसी के मारे जाने की ख़बर आती थी। मोबाइल की इफ़रात के सबब भी अफ़वाहों में इज़ाफ़ा हुआ, मगर ये सब अफ़वाहें झूठी साबित हुईं। 11 मुहर्रम को भी अफ़वाहों का बाज़ार गर्म रहा और एक आद मोहल्ले में बेक़ुसूर रास्ता चलने वालों को ज़ुल्मो सितम का निशाना भी बनाया गया, लेकिन फ़साद फिर भी नहीं हुआ, लेकिन सबसे दिलचस्प बात ये थी कि इन झगड़ों का सबब क्या था वह कोई नहीं बता सका। क्योंकि न तो शियों की तरफ़ से मुआहदे की ख़िलाफ़वर्ज़ी हुई थी न सुन्नियों की तरफ़ से, यानी झगड़ा बेसबब था। आख़िर में शिया और सुन्नी उलमा की एक मीटिंग डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट की रिहाइशगाह पर हुई और उसमें दोनों फ़िरक़ों के लोगों से अम्नो अमान बनाए रखने की अपील की गई। इसके बाद एक और बेहतरीन पहल कुछ शिया और सुन्नी नौजवानों ने की उन लोगों ने 12 मुहर्रम की रात को लखनऊ के निहायत हस्सास इलाक़े विक्टोरिया स्ट्रीट पर एक अम्न मार्च का इन्एक़ाद किया। इस तक़रीब की ख़ास बात ये थी कि शिया नौजवानों का गिरोह सुन्नी आलिमे दीन मौलाना ख़ालिद रशीद फ़िरंगी महली को एक अमन मार्च में बुलाने के लिए फ़िरंगी महल गया और सुन्नी नौजवानों का गिरोह शिया आलिमे दीन मौलाना कल्बे जवाद के घर गया और ये दोनों गिरोह इन उलमा को अपने साथ लेकर पाटानाला चौकी के क़रीब आए, जहाँ दोनों ने शिया और सुन्नी फ़िरक़ों से अम्न क़ायम रखने की अपील की, लेकिन मीडिया ने इस अहम तरीन प्रोग्राम को बिल्कुल नज़र अंदाज़ किया। शायद मीडिया को मुसलमानों के दरमियान फ़साद की ख़बरें ही अज़ीज़ हैं और अम्नो अमान की बातों से उसका कोई मतलब नहीं। मीडिया ने भले ही कवरेज न किया हो, लेकिन इस तरह के प्रोग्रामों के इन्एक़ाद से पता चलता है कि मुस्लिम नौजवान मसलकी फ़सादों को रोकने के लिए कितने एक्टिव हो गए हैं और नई नस्ल के लोग कितनी ज़िम्मेदारी के साथ इत्तेहाद की मशाले रौशन करने में लगे हैं।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 22 दिसम्बर 2010[ई०])

मुख्य समाचार

इमाम हसन असकरी अ० के मज़ार के पास

ख़ुदकश हमले में 38 जायरीन जाँबहक़

इराक़ी शहर सामरा में शिया जायरीन को निशाना बनाकर किए गए एक ख़ुदकश धमाके में तक़रीबन 38 अफ़राद मारे गए और 74 दूसरे ज़ख़्मी हो गए। मज़ाफ़ाती बिलाद क़स्बे के मेयर अमीर हुदा ने बताया कि इस हमले में 38 अफ़राद मारे गए और दूसरे 74 ज़ख़्मी हो गए। सामरा पुलिस ने भी मरने वालों की तादाद की तस्दीक़ की है। सलाहुद्दीन सूबे के नायब गर्वनर अहम अब्दुल जब्बार ने बताया कि ये काम एक ख़ुदकश हमला आवर का था जिसने बम से लैस एक जैकेट पहन रखी थी। जब सामरा के जुनूबी दरवाज़े पर एक इराक़ी फ़ौजी ने उसे रोकने की कोशिश की तो उसने ज़ायरीन से भरे एक बस टर्मिनल के पास ख़ुद को उड़ा दिया। ख़ुदकश हमला बग़दाद के शिमाल में वाक़े सुन्नी अक्सरियत के क़सबे सामरा के बाहर हुआ। सामरा के अस्पताल में मौजूद एक पुलिस अहलकार ने बरतानवी ख़बर रसां इदारे राइटर को बताया कि ख़ुदकश हमले में औरतों और बच्चों समेत कई लोग ज़ख़्मी भी हुए। इराक़ में सन् 2006ई०-2007ई० के बाद से तशद्दुद के वाक़िआत में मुसलसल कमी हुई है लेकिन बम हमलों का सिलसिला अभी तक जारी है। बग़दाद में बी०बी०सी० नामा निगार जोनाथन हेड का कहना है कि शिया ज़ायरीन पर हमलों की तादाद इतनी ज़्यादा है कि उनसे हालिया महीनों में सैकड़ों अफ़राद हलाक हो चुके हैं। फ्रांसीसी ख़बर रसाँ इदारे ए०एफ़०पी० ने अस्पताल के एक अहलकार के हवाले से बताया है कि शिया ज़ायरीन को ले जाने वाली बस पर होने वाले ख़ुदकश हमले में 38 अफ़राद हलाक हुए हैं। सामरा में ग्यारहवें इमाम हसन असकरी का मज़ार है। पुलिस का कहना है कि ज़ायरीन से भरी बस सामरा में ज़्यारतों के बाद शहर से रवाना हुई ही थी जब उसमें धमाका हुआ। दस फ़रवरी को कम से कम आठ अफ़राद उस वक़्त हलाक हुए जब बारूद से भरी एक कार जेल में सामरा आनेवाले ज़ायरीन के दरमियान धमाके से फट गई। सामरा में वाक़े सुनहरी गुम्बद वाली अल-अस्करी मस्जिद सन् 2006ई० में होने वाले बम धमाके में बड़ी हद तक तबाह हो गई थी। इस बम हमले को सन् 2006ई०-2007ई० में होने वाले फ़िरक़ावाराना तशद्दुद का ज़िम्मेदार माना जाता है।

इस्लामी इंक़ेलाब इंसानी तारीख़ का एक अज़ीम वाक़िआ

इस्लामी जमहूरिया ईरान के सदर जनाब अहमदी नेजाद ने इंक़ेलाबे इस्लामी की कामयाबी की बत्तीसवीं सालगिरा के मौक़े पर तेहरान के आज़ादी स्क्वायर पर दसियों लाख लोगों के इज्तेमाअ से ख़िताब में कहा है कि इस्लामी इंक़ेलाब ने आज न सिर्फ़ ईरान में बल्कि आलमी सतह पर शफ़्फ़ाफ़ मोस्सिर और फ़ैसलाकुन तरीक़े से अपना लोहा मनवा लिया है। उन्होंने तेहरान के अज़ीम जुलूस से ख़िताब में कहा कि आज ईरानी क़ौम की तारीख़ साज़ तहरीक को बत्तीस बरस हो रहे हैं और वह मज़ीद एक साल अपने आला अहदाफ़ से नज़दीक हो गई है। सदर जनाब अहमदी नेजाद ने कहा है कि 1979ई० में कामयाब होने वाला इस्लामी इंक़ेलाब तारीख़े बशरियत का एक अज़ीम वाक़िआ है जो इंसान को कमाल की तरफ़ ले जा रहा है।

उन्होंने कहा कि आज दुनिया पर वाज़ेह हो चुका है कि इस्लामी इंक़ेलाब ईरानी क़ौमियत पसंदी या किसी पार्टी और गिरोह के मफ़ादात पर उस्तुवार नहीं है बल्कि क़ौमी मफ़ादात पर भी उस्तुवार नहीं है।

सदर जनाब अहमदीन नेजाद ने कहा कि इस्लामी इंक़ेलाब 32 बरसों बाद भी दुनिया की आम तहरीकों की तरह न कमज़ोर पड़ा है और न मुनहरिफ़ हुआ है बल्कि मज़ीद जज़्बात से सरशार, ताक़तवर, शादाब और मुतहर्रिक हुआ है।

इस्लामी जमहूरिया ईरान के सदर ने ऐटमी मामले की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि दुनिया के तमाम सामराजी हलक़े जो मिल्लते ईरान को क़ौमों की आज़ादी के परचमदार की हैसियत से देखकर मिल्लते ईरान की तरक़्क़ी से हेरासाँ हैं ये कोशिश कर रहे हैं कि मिल्लते ईरान ऐटमी टेक्नालोजी हासिल न कर सके लेकिन आज की दुनिया जानती है कि हमारे साइंसदानों ने सौ फ़ीसदी एटामिक फ़्यूल साइकिल हासिल कर लिया है।

सदर जनाब अहमदी नेजाद ने कहा कि सामराजी मुल्कों ने अपनी तमाम शैतानी और माद्दी ताक़त इस्तेमाल कर ली कि ईरान एटमी ताक़त न बन पाए लेकिन ईरान ने ये एटमी ताक़त अपने साइंसदानों की मेहनत से हासिल कर ली है। सदर अहमदी नेजाद ने उन तमाम साम्राजी मुल्कों को मश्वरा दिया कि वह मुक़ाबला करने के बजाए तआवुन का रास्ता चुनें उसी में उनका फ़ायदा है।

ग़ज़्ज़ा के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में
इस्राईली ग़ारतगरी में दस फ़िलिस्तीनी ज़ख़्मी

इस्राईली फ़िज़ाइया के लड़ाकू जहाज़ों ने ग़ाज़पट्टी के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों पर तीन हमलों में दस फ़िलिस्तीनियों को ज़ख़्मी कर दिया है। एफ़-16 जहाज़ों के हमलों में अदविया के वेयर हाउस समेत मुख़्तलिफ़ मकान और तामीरात खण्डर बन गए हैं। फ़िलिस्तीन मेडिकल सार्विसेज़ के मीडिया क्वार्डिनेटर अदहम अबु सलमिया ने बताया कि इन ग़ारतगरियों में आठ शहरी ज़ख़्मी हो चुके हैं जिनमें दो बच्चे और तीन औरतें भी शामिल हैं। ज़ख़्मियों को कमाल अदवान अस्पताल मुंतक़िल कर दिया गया है। इस्राईल ने दवाईयों के वेयर हाउस को निशाना बनाया था। अबु सलमिया ने बताया कि इस्राईल का सीधे तौर पर निशाना दवाईयों का स्टोर ही था, इन हमलों में दवाईयों के वेयर हाउस के आसापास की इमारतों को भी सख़्त नुक़सान पहुँचा है। ''मरकज़े इत्तेलाआते फ़िलिस्तीन' के नुमाइंदे ने बताया कि इस्राईली हमलों में जेल रेस के इलाक़े में अदविया के स्टोर को निशाना बनाया गया था। बमबारी के बाद इलाक़े में ख़ौफ़नाक आग लग गई और इस वेयर हाउस के अतराफ़ की इमारतों को भी सख़्त नुक़सान पहुँचा है। उन्होंने बताया कि इमेरजेंसी के अमले ने कई घण्टे लगातार काम करके मुख़्तलिफ़ इमारतों को लपेट में लेने वाली आग बुझा ली और ज़ख़्मियों को कमाल अदवान अस्पताल मुंतक़िल कर दिया है। मक़ामी ज़राए ने बताया कि ग़ारतगरी करने वाले जहाज़ एफ़-16 तर्ज़ के थे। जहाज़ों के दाग़े गए मीज़ाईलों ने ग़ज़्ज़ा शहर की ज़ैतून कालोनी में कारों की मार्केट के साथ ख़ाली ज़मीन को निशाना बनाया। मीज़ाईलों के गिरने की जगह पर बड़ा गढ़ा पड़ गया। अभी तक इस हमले में किसी जानी नुक़सान की ख़बर नहीं मिली। इसके बाद मग़रिबी इलाक़े में जेहादे इस्लामी के अस्करी विंग अल-क़ुद्स बिग्रेड के एक अड्डे पर दो मीज़ाईली हमले किए गए। मेडिकल ज़राए के मुताबिक़ मीज़ाईल हमलों में अड्डे के क़रीब मलबा उठाने वाले मज़दूर सख़्त ज़ख़्मी हुए हैं।

मिस्र का इंक़ेलाब अवामी इंक़ेलाब है, अमरीका झूट बोलता है: हुज्जतुल इस्लाम सै० हसन नस्रुल्लाह

हिज़्बुल्लाह लेबनान के सरबराह हुज्जतुल इस्लाम सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा है कि मिस्र का इंक़ेलाब अवामी इंक़ेलाब है जिसमें मिस्र के तमाम तबक़ात शामिल हैं। ख़बर रसाँ एजेंसी ने अलमनार टी०वी० के हवाले से नक़्ल किया है कि हिज़्बुल्लाह लेबनान के सरबराह सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा है कि मिस्र का इंक़ेलाब अवामी इंक़ेलाब है जिसमें मिस्र के तमाम तबक़ात शामिल हैं। उन्होंने कहा कि लेबनानी अवाम मिस्री अवाम के साथ हैं उन्होंने कहा कि मिस्री अवाम पर ऐसे ही बेबुनियाद इल्ज़ामात लगाए जा रहे हैं जैसे ईरान के इंक़ेलाबे इस्लामी के दौरान ईरान के अवाम और ईरान के रूहानी पेश्वा हज़रत इमाम ख़ुमैनी पर लगाए जाते थे। उन्होंने कहा कि दुश्मन झूठे और गुमराहकुन प्रोपगण्डों में हज़रत इमाम ख़ुमैनी को सी०आई०ए० का हामी क़रार देते थे जबकि इमाम ख़ुमैनी अमरीका को सबसे बड़ा शैतान क़रार देते थे उन्होंने कहा कि ईरानी इंक़ेलाब को मुनहरिफ़ करने के लिए अमरीकी नौकरशाह ने अमरीका के साथ मिलकर बेशुमार इल्ज़ामात लगाए जो सब के सब झूठ की बुनियाद पर थे, अमरीका आज वही रविश मिस्री अवाम के इंक़ेलाब के साथ भी कर रहा है अमरीका मिस्र के अवामी इंक़ेलाब को मुनहरिफ़ करने की सरतोड़ कोशिश कर रहा है और इस सिलसिले में अमरीका ने अपने पुराने खिलाड़ियों को भी मैदान में उतार दिया है जो हुसनी मुबारक के गीत गा रहे हैं, सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि अमरीका मिस्र के इंक़ेलाब में ग़ैर मुल्की हाथ क़रार दे रहा है जबकि ऐसा हरगिज़ नहीं है मिस्र का इंक़ेलाब मिस्र के अवाम लाए हैं उन्होंने कहा कि अमरीका और इस्राईल मिस्र के इंक़ेलाब को रोटी और कपड़े और मईशत का इंक़ेलाब क़रार दे रहे हैं जबकि ये इंक़ेलाब एक इस्लामी और इक़्तेसादी इंक़ेलाब है और अमरीका और इस्राईल मिस्री अवाम के फ़हम व शऊर की तौहीन कर रहे हैं। सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि मिस्र का इंक़ेलाब मिस्री अवाम का इंक़ेलाब है ये इंक़ेलाब मिस्र के हुर्रियत पसंदों और मज़लूमों का इंक़ेलाब है सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि अमरीका और यूरोपी मुमालिक मिल कर मिस्र के अवामी इंक़ेलाब की राह मुनहरिफ़ करना चाहते हैं और मिस्री अवाम को फ़रेब और धोका देने की उन्होंने तलाश व कोशिश पहले ही शुरु कर दी है। कभी वह मिस्र के सदर से कहते हैं कि वह इक़्तेदार मुन्तक़िल कर दे और कभी कहते हैं कि वह इक़्तेदार में बाक़ी रहे। उन्होंने कहा कि मिस्री अवाम के इंक़ेलाब ने अमरीका और इस्राईल और इलाक़े में उनके हामियों पर ख़ौफ़ो हिरास तारी कर दिया है उन्होंने कहा कि सब जानते हैं कि अमरीका और इस्राईल मिस्र की मौजूदा हुकूमत के सबसे बड़े हामी हैं और इस वक़्त भी वह मिस्री हुकूमत के हामी हैं वह अवामी अफ़कार को मुनहरिफ़ करने के लिए इक़्तेदार मुन्तक़िल करने की बातें कर रहे हैं हालांकि अमरीका का ये सब से बड़ा झूट और फ़रेब है, हक़ीक़त ये है कि वह मिस्री हुकूमत के साथ है।